कनक मिथिला आनन्द मालाक पुष्प

श्री सीताराम

फुलवाड़ी लीला

(संक्षिप्त)

(मिथिला भाषा)

रचयिता :—
लाड़िली शरण "कनकलता"
सुन्दरपुर-बीरा
दरभंगा ।

१ आषाढ़ २०२०

निछाउर पचीस नयका पाइ

H
811
Si 86 S

INDIAN INSTITUTE OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY SIMLA

लाभ ।
अथराभ ।।
"कनक"

प्राप्ति स्था
त कृष्ण दास
तथा बिक्रेत
राय, दरभङ्गा

र्ण जकाँ आओ

गुरू वर्णक उच्चारण लघुवर्ण जेकाँ होइछ तें हम गणवाक सुविध क हेतु (') एफोस्टौफी चिन्हक प्रयोग कएल अछि। लघुवर्ण आगाँ जँ एफोस्टौफी रहए तँ ओकरा गुरुवर्ण, ओ गुरुवर्ण आगाँ रहए तँ लघुवर्ण बूझब। मुद्रण मे जँ कतहु दोष हो ताहि हेतु हम क्षमा प्रार्थी छी। हँ एक गोट आओर हम चिन् (.) विश्राम चिन्हक' प्रयोग कएल अछि एकरा गणवाक हे चरण बूझल जाए।

लाड़िली शरण

मुद्रक :—श्री बिन्दा प्रसाद, दरभङ्गा प्रेस कं० (प्रा०) लि०, दरभङ्गा

Library IIAS, Shimla
Acc. No 31816
Date 17.6.69
H 811 Si 86 S
00031816

श्रीसीताराम फुलवारी लीला

वन्दना

दो० गुरूक चरण वन्दन प्रथम. करइत छी सत वेरि।
करथु हमर संलग्न चित. कृपाकंज शिर फेरि ॥१॥
गिरिजासुत गणराज कें. सुमरै छी चितलाय।
प्रथम पूज्य जे छथि सतत. सन्तत रहथु सहाय ॥२॥
श्रीशंकर पदरेणु कें. लेलहुँ शीश चढ़ाय।
जे भक्तिक भण्डारि छथि. कनिएक होथु सहाय ॥३॥
महावीर अपनेक पद. हम धैलहुँ मन लाय।
दान करू रति रामपद. कनि संयोग बनाय ॥४॥
जयति जनकनृपनन्दिनी. जय जय अवधकिशोर।
"कनक" दीन पर कने करू. कृपा दृष्टिकें कोर ॥५॥

मालिनक स्वप्न

साजन देखल अछि एक सपना. रातुक शुभ भो'रहरिया मे ॥
आएल दू सुकुमार मनोहर. श्री मिथिलापति बगिया मे।
टहलैत एमहर ओमहर हम छलिऐ. फूलक सघन किआरिया मे ॥
जागल भाग हमर सुख लूटल. सटलै पल जँ' निँदिया मे।
हुनकर अनुपम छवि पर वारल. सर्वश सभ लए डलिया मे ॥
टोना अंग अंग छल धएने. राखल अलक जुलुफिया मे।
की कहु प्रियतम हुनकर सूरति. जाइछ कहल ने बतिया मे ॥
अएता आइ अवश्ये प्रीतम. देखल अन्तिम घड़िया मे।
चलिऔ "कनक" सचेतल रहबै. प्रिय अहुँ ओ'हि फुलवड़िया मे ॥

प्रभाती

जागू राम कृपाकेँ मूरति. कमल वदन निज खोलू ओ।
दरश पिआसल भ्रमर वृन्द अछि. छवि पराग निज खोलू ओ॥
उषा सुन्दरी विहुँसब लखितहि. मन्द निशाकर देखू ओ।
मधुर स्वरेँ गवइछ पक्षी सभ. करइछ नृत्य विशेषू ओ॥
सुरवाला लज्जित भए जइती. सिखिकुल नृत्यक आगू ओ।
सुर दुर्लभ सुख मिथिला छिलकए. लखि आलस अबत्यागू ओ॥
"कनक" आब जागू करुणानिधि. मुसुकि जगत दिशि देखू ओ।
दरश सुधामृत बाँटि बाँटि कए. युगक प्यास अब मेटू ओ॥

मालि श्री रामसँ

को'ना कहु सरकार. पैसए एखन बगियामे॥
ए'खन समय अछि आबक. सीय टहलाबक.
डर हो'इ अछि हीय हमार।
मालिक मंडलि अछि बाहर. मलिनिया भीतर.
अछि राजा के अज्ञा विचार।
नहि जाएत अखन अनठीया. सूनू मुदनीया.
पर जेना लगै छी चिन्हार॥
भोरे जे कहलक मालिनि. हमर चन्द्राननि.
छी साँचे सुछवि आगार।
हमरो सुधि बुद्धि हे'राएल. सुचित बौआएल.
हेरि अ'हाँक छवि छविधार॥
मन होइछ सँगे सँग जइतहुँ. रूप अमि छकितहुँ.
अछि एतहिक "कनक"क भार।

वाटिकाक प्रसंशा श्रीराम द्वारा

देखू देखू लछुमन शोभा. एहि अनुपम फुलवड़िया के।
जनु मनसिज निज सत्व बाँटिकए. मोहथि मन घुमबैया के ॥१॥
एहन बसन्ती दृश्य कतहु नहि. कहिओ देखल जग भरि मे।
हमरो मनके मोहि रहल अछि. धन्य कही फुलबड़िया के ॥२॥
वृक्ष अनेक रङ्गके लागल. ललित लता अति रंग विरंग।
जनु शोभा निज रूप छटासँ'. सजलन्हि एहि फुलवड़िया के ॥३॥
नव-नव रंगक फूल सजल अछि. नव-नव पल्लव लागल अछि।
इन्द्रक पुष्पवाटिका लज्जित. देखि जनक फुलवड़िया के ॥४॥
चातक कीर चकोर को'इलनी. राग मोहनी गाबि रहल।
खेलि रहल वन जन्तु मुग्ध भए. श्री बढ़वए फुलवड़िया के ॥५॥
मध्य बाटिका मे तराग अछि. निर्मल जलसँ' परिपूरित।
मणिमय घाटक शुभ्र ज्योति तँ'. चमकाबए फुलवड़िया के ॥६॥
सजल लहरि चढ़ि सरसिज नाचए. मधुपक चित बौराबइ अछि।
जल विहंग कल क्रीड़ा करइछ. सरसाबछि फुलवड़िया के ॥७॥
शेष, शारदा, नारदादि केँ. पार' ने लगलन्हि जे वर्णन।
"कनक" करू की ह'म प्रशंशा. परम दिव्य फुलवड़िया के ॥८॥

मालिनक प्रश्न

कतय रहै छी अहाँ. श्याम गौर जोड़िया ओ।
परिचय अपन दीअ'. प्रिय धनुधरिया ॥०॥
अहाँक सुरति देखि. सुधि बुधि कात गेल।
नाँचि रहल चित. मोर धनुधरिया ॥१॥

विहि, हर, हरिहुँ के. एहन सूरति नहि।
मदनहुँ होएता. विभोर धनुधरिया ॥२॥
धन्य छथि पितु मातु. धन्य पुर नर नारी।
दिवा निशि निरखथि. रूप धनुधरिया ॥३॥
ललित ललाम पग. कोमल केँ सिहबैछ।
भेलि बड़ भागी भूमि. धूलि धनुधरिया ॥४॥
दुहु छवि ज्योति पाबि. कमल कुमुद हँसे।
अनरितु फूले फूल. डारि धनुधरिया ॥५॥
अबुधि 'कनक' की. चिन्हत बिनु कहनहि।
भरम मेटवियौ. मोर धनुधरिया ॥६॥

श्रीरामक उत्तर

अपन उत्तर सुनू. होश देह निज जानू।
परिचय पधारबाक. काज हे मलिनियाँ ॥१॥
राम अछि नाम मोर. लखन ई छोट भाइ।
दशरथ नाम मोर. पितु हे मलिनियाँ ॥२॥
विख्यात नगर एक. अवध पछिम मे।
हमर पिताजी छथि. भूप हे मलिनियाँ ॥३॥
गुरूवर कौशिक के. सँग हम एतए अएलहुँ।
छथि बड़ नियम. निधान हे मलिनियाँ ॥४॥
पूजन करथि इष्ट. विविध विधान साजि।
"कनक" सुमन भार. मोहि हे मलिनियाँ ॥५॥

मालिन श्रीराम सँ

एहन कोमल करसँ' फूल कोना तोड़ब. औ रघुबंशी छैला।
कमलहुँ सँ' कोमल दूनू हाथ ॥१॥
एहन कोमल सरिसों. कलँगी ने होइछ ॥ औ रघु० ॥
मखमल सँ' कोमल दूनू हाथ ॥२॥
सुमनक दल ने कहीं. आँगुर मे गड़ि जाए ॥ औ रघु० ॥
शंका लागल अछि हमरा साथ ॥३॥
हमरा रहैते अहाँ. फूल नहि तोड़ू ॥ औ रघु० ॥
पाप चढ़ि बैसत हमरा माथ ॥४॥
"कनक" विलोकि रूप. फुलगण मुसकैए ॥ औ रघु० ॥
हमरो हिया होइ अछि वेहाथ ॥५॥

फूल पर शासन मालिन द्वारा

लाड़ली सुमन तो सम्हरि जाहे. लाड़ला तोड़े आइ ॥०॥
कत दिन भे'लह एहन नहि पौलह. भे'टतह ने पुनि भरमाइ हे।
जनिकाँ सभ के'वो' फूल चढ़ाबथि. सएह तो'ड़थि हरषाइ हे ॥१॥
कर सन मृदुल ने' तोहर करछह. मखनो ने ए'हन लखाइ हे।
जाह सम्हरि जे दल नहि करमे. कनिओं गरनि रघुराइ हे ॥२॥
लाल लिबौता डारि झटाझट. फोंका ने कर पड़ि जाइ हे।
पात सटह जनि गात कनेको. क्लेश ने' होबए पाइ हे ॥३॥
"कनक" देखि कए भाग्य सराहथि. धन्य जनकजी राइ हे।
सुफल भे'ला नर नारि करौलन्हि. जनकपुरी के पाई हे ॥४॥

फूल देखौनाइ

हे औ लाल ! लीअ' सुमन बगिया के ।।
मन अनुरूप फूलदल तोड़ू. भ'रू अपन डलिया के ।
ई गुलाब के मूल काँट अछि. छूबू कने सरिया के ।।
जूही चमेली बेली मलतिया. फुलकल कीअरिया के ।
चम्पा पर मधुपावलि झूमए. भागए तुरत छिछिया के ।।
सरसिज जल-थल सुमन अनेको. कहए कोन दुनियाँ के ।
"कनक" लिअ' इम्हरो इम्हरो प्रभु. सुभग सुमन बगिया के ।

फूलक भाग्य

सुफल अछि फूल वो बेली. जनम मिथिला पुरी पावो'ल ।
लली छथि प्रेम नित करिते. ललाके चित्त ललचावो'ल ।।
लखल हम नयनसँ' हिनका. छुअल प्रभु हाथसँ' अपने ।
परसि कए गाल परसूनो. हिया निज नीज जूरावो'ल ।।
कएल शासन मृदुल वपु लखि. नियम कहि प्रेम मे निवहए ।
परसि के'वो' पद, चिवुक, के'वो' गर. स्वतः अमरत्व पद पावो'ल ।।
इएहे सुख आइ लेबए लए. वसन्तो रानि बनि अइली ।
"कनक" हिनकहि सफलतासँ'. बुझाइछ किछु हमहुँ पावो'ल ।।

पारवतीक भाग्य

गौड़ी धन धन मनाउ ।।
अपने स्वामिनि सिया. चललो पुजाउ ।।०।।
शंकर सुआमि. जनिकाँ माथा नवाथि ।
तनिकर ललाट निज. पद पर धराउ ।।१।।

अक्षत चानन. फुल शिश चढ़बाउ।
सुगन्धित फुल केर. माल पहिरबाउ ॥२॥
सूललित गीत. कल कंठसँ' गबाउ।
प्रेम वारि वरषा मे. मन भरि नहाउ ॥३॥
"कनको"क मन केर. आशा पुराउ।
दासी स्वामिनि सँ'. सेवा कराउ ॥४॥

गौड़ी पूजन

सखि हे कनक कमल पैर सिय पूजै छथि॥
,, कनक भ्रमर जेना झुकि झूमै छथि॥
,, अंगक भूषण केना बाजै अछि।
,, भनन भनन शब्द रागै अछि॥
,, पुनि पुनि अमि हेतु अलि झूकै अछि।
,, कमलक मुँह ने तैयो खूजै अछि॥
,, भानु प्रकाश ने अखन आएल अछि।
सखि हे "कनक" कमल तै सँ' सकूचाएल अछि॥

सुभगा श्रीरामसँ

ठाढ़ रहू अहिठाम अहाँ. जाबत स्वामिनि कें आनै छी।
अपन झाँकि की अहाँ दे'लहुँ. हम अखनहिं तुरत लखावै छी॥१॥
ई घमंड निज छोड़ि दिअ'. जे सुन्दरतम् दरशावै छी।
देखब सियके अहूँ बुझब जे. की शोभा झलकावै छी॥२॥
छी भानुवंश के वीर अहाँ. से तुरत वीरत्व निकालै छी।
तीर कमान एकात कराकए. आइ बेकाम बनावै छी॥३॥

बेरि एकहि दरशाए दरश. हम अखनि अधैर्य करावै छी।
मोहन के गर मोहिनि दए. मनमोहन नाम मेटाबै छी ॥४॥
"कनक" लाड़ली रूप लखा. हम लाड़िलि लार फँसाबै छी।
दए बेरी बिहुँसैत बदन. बदला बर जोर चुकाबै छी ॥५॥

सुभगा सखी सभसँ

बगिया मे देखलौं ह'म. श्याम गोर जोड़ा।
सुनु हे सजनी, वएह लेल चित के चोराए॥
जेहिखन ई अँखिया ल'ड़ल. हँसि वाण छोड़ल।
सुनु हे० देलनि चंचलता छोड़ाए॥
निज नयन सँ' जे देखलौं. रूप ह'म हुनकर।
सुनु हे० मूँहमा सँ' कहलो ने' जाए॥
श्यामे श्याम भेल तन. भासि गेल ई मन।
सुनु हे० आन रंग आब ने लखाए॥
मन भेल हुनकहि संगे. दिवा निशि रहितहुँ।
सुनु हे० लोक लाज दितहुँ हटाय॥
करू नहि बिलम्ब "कनक"ऽलि. चलि छवि अमि चीखू।
सुनु हे० चलि जयता वोहो अगुताय॥

राम के देखैक लेल चलबाक आग्रह

सुनु सुनु हे सखिया. हमरो ई बतिया
हे देखैलए चलू. काल्हि अएला राजा के कुमार ॥०॥
विश्वामित्र मुनि संगे. दुई गोट छयलवाहे. देखै०
सुनलौं छथि भुवन के अधार ॥१॥

जनक नगर बिच घुमिकए. मोहनी चलौलनि हे. देखै०
मोहलनि नारी नर अपार ॥२॥
सभके जे मूँहे सुनलहुँ. वोहन सुरतिया हे. देखै०
तूलै छथि ने देवतो हजार ॥३॥
"कनक"ऽलि अवश्ये चलू. दरशन करबालए. हे देखै०
केहन छथि दूनू सुकुमार ॥४॥

रामक दशा

चललि जखनि सिय रघुवर निरखय. विसरि गेली सुधि-वुधितनके ।
छलि अकुलाएल रूप निरखए लए. देखथि नहिं किछु पर मगके ॥१॥
करके कँगना पा'एरक पैजनि. रून झुन शब्द हरए मनके ।
अनुपम मन मोहक धुनि पड़लनि. कान राम जीवन धनके ॥२॥
राम कहल सुनि धुनि निज हिय मे. लछुमन ध्यानस सुनु धुनके ।
हमरा हिय मे जानि पड़ै अछि. काम लगौलक शर फुलके ॥३॥
दए डंका चाहै अछि जीतए. आनए वशमे मम मन के ।
मानस हमर चहैये जीतए. हमर ज्ञान वो भरि जग के ॥४॥
"कनक" विश्व में जनिक पताका. छीननि नहि के'वो' त्रिभुवन के ।
लाड़िलि किंकिन कंकन लेलक. सहजहि निज वशएक छनके ॥५॥

पुनि

लाड़िली के शोभा देखि लो'भा. मन गेल श्याम रघुनन्दनके ।
छल छवि अनुपम आलौकिक अरु.
चट छीनल मन नृप चन्दनके ॥१॥
तँ' श्याम कहल निज लछुमनसँ'. मन छोभै अछि लखि सिय तनके ।
शुभ अंग हमर अछि फड़कि रहल. विधि बात जनै छथि मम मनके ।२।

रघुवंशज के अछि ई स्वभाव. नहि पकड़थि पंथ कुमारग के।
हमरा अछि निज विश्वास बहुत. बन्धेज सूनू ई मम कथके ॥३॥
नहि हेरि सकी कहिओ पर तिय. जहिना चौठीक सुधाकरके।
अछि "कनक" विश्वमे अतिकम्मे. आबादि एहन नारी नरके ॥४॥

राम पर सुभगाक कटाक्ष

ई की बात उनटलहुँ रघुवर. ई की बात उनटलहुँ औ।
हम नहि पर नारी हेरै छी. नहि रघुकुल मे दे'खलहुँ औ ॥१॥
अखनहि स्वामिनि पैरी धुनिसुनि. सुधि-बुधि अपन बिसरलहुँऔ।
मनसिज उपजल स्वामिनि लखिकए. तकरे वश मे पड़लहुँ औ ॥२॥
डंक बजाय काम अपनौलक. लछुमनसँ' ई कहलहुँ औ।
आब सुनत के ई सफाइ सभ. पाछाँ क' जे बजलहुँ औ ॥३॥
स्वामिनि जे कएलन्हि अछि जियकेँ. छिन्न-भिन्न हम लखलहुँ औ।
ठाढ़े-ठाढ़े सभ देखै छी. फेरू जे सब भखलहुँ औ ॥४॥
"कनक" नयनतँ' हमर जुड़ाएल. यद्यपि अपने ठकलहुँ औ।
बड़ सभके जे चित चो'रबै छी. अब सीते बस बनलहुँ औ ॥५॥

पुनि

हे'ओ रघुवर कने हेरू. लजा'इ छी की निरखि हमरा।
भे'टल की बात जे कहलहुँ. पुरल मन काम तँ' हमरा ॥१॥
सिया के देखि दुहु नयना. अचंचल भेल औ रघुवर।
टकाटकि लागि गे'ल छन मे. जुराएल जी कहू ककरा ॥२॥
अपन कुलके पताका के. झुकौलहुँ आइ औ रघुवर।
ललाइत भ' सिया लखलहुँ. कहत की लोक भरि नगरा ॥३॥

करोड़ों काम नहि तुलना. करै छल मुखकमल लखिकए।
कतए गे'ल स्वामिनी आगाँ. दबल अछि आई से मुखरा ॥४॥
नयन शर कोन तरकस मे. नुकाएल आई रघुनन्दन।
भृकुटि धनु से नुकाएल कत. भे'लै की लाज कहु तकरा ॥५॥
मधुर बिहुँसब असी कत्तए. धनुषधर राखि देने छी।
डे'रा कए स्वामिनी आगाँ. वो'हो अछि गे'ल की जकड़ा ॥६॥
निछाउर देह देने छी. बनल छी लट्टु सीते लखि।
मोहैनी फाँस सभ तजलहुँ. पड़ल बड़का स की पचड़ा ॥७॥
सुआमिनि प्रेम जालीमे. फँसौलन्हि आइ मनमोहन।
बझल छी ई लखै छी हम. बझल हो जाल मे मकरा ॥८॥
अपन शुभ नाम मनमोहन. हँसौलहुँ देखु रघुलाला।
दशा जे कएल छल हमरा. "कनक"के खुब जुड़ल जिअरा ।९।

सीताक व्याकुलता

जखन भे'ला दृग ओझल हे. रघुवर घनश्याम।
सिय मन चिन्ता भेलनि हे. कत नुकला राम ॥१॥
लता पता मे झाँकथि हे. निज प्रेमी धाम।
चकित निहारथि चहुँदिशि हे. मनमोहन राम ॥२॥
विह्वल भेलि शोक वश हे. बिनु छवि उ ललाम।
जे'ना विना मणि साँपिनी हे. नहि लह विसराम ॥३॥
कहलन्हि मन किअ अएलहुँ हे. देखए एहिठाम।
कतए गे'ला चितचो'रवा हे. भेला विधि बाम ॥४॥
चिन्ता "कनक" बनावो'त हे. हमरा हिय धाम।
नहि कहिओ ई छाड़त हे. जने' भे'टता राम ॥५॥

सखी द्वारा रामक दशा

लखु एहि लता ओर. छथि वएह दूनू चोर।
बड़ साँवर लघु गोर. चितचोरवा हे ॥०॥
माथ किरीट चमाक. कान कुंडल छमाक।
दुति दसन दमाक. मुखरवा हे ॥१॥
कच केहन छनि कारि. देखू करै छनि मारि।
श्याम नगवाक धारि. छनि लिलरवा हे ॥२॥
भौंह सुन्दर कमान. नैन जहरैल वाण।
लैछ हेरितहि जान. नारि नरवा हे ॥३॥
के'हन सूभग गाल. ठोढ़ केहन छनि लाल।
जीया रतिपति साल. मजेदरवा हे ॥४॥
देखू "कनक" भ निहाल. छलहुँ बनल बेहाल।
दूनू रघुकुल लाल. सगुण घरवा हे ॥५॥

सीताक मुग्धता

स्वामिनि के हिय मे अएलनि. रघुवर जेल द देलनि हे।
चितचोर चोरौलक चित के. वश मे आब ल लेलन्हि हे ।०।
झट विस्तृत हिय कारागर. छल नयन द्वारि बड़ सुन्दर।
पलक सटा बन केलनि ॥२०॥१॥
उर मन्दिर मे बैसाकए. हुनका वो'हिठाम रिझाकए।
मानस पूजा विरचेलनि ॥२०॥२॥
खुब ध्यानमग्न सखि देखल. सकुचाए लाज वश छोड़ल।
प्रेमक सिन्धु समएलनि ॥३॥

छल "कनक" आलि मन अटकल. शुभ श्याम सुन्दर कें बलकल।
सिय तजि रघुवर दिशि भेलनि ॥४॥

झाँकी

सखि हे देखू त आब युगल झाँकी।
„ राघो लखन के नयन बाँकी॥
„ शिर पर मुकुट केहन शोभै छनि।
„ मयूरक पाँखि ऊपर घोंपल छनि॥
„ कुसुमक कलिके गुच्छ लागल छनि।
„ शशि रवि हीर मोती बुझु जागल छनि॥
„ मुकुटक शोभा खुब बढ़बै छनि।
„ फूल लोढ़लनि से घाम अबै छनि॥
„ मकराकृत कुंडल डोलै छनि।
„ भाल पर तिलक जगत मोलै छनि॥
„ भृकुटि विचित्र धनुष तानल छनि।
„ नयन सरोज अरुण नूतन छनि॥
„ और केहन छनि सभ जनै छी।
„ वोकरे घायल सागर बुलै छी॥
„ चारु चिवुक नाक शुक सन छनि।
„ अधर अरुण पातर पान छनि॥
„ हेरि हँसि लैत बिना मोल छथि।
„ दरश लखाकए करै बोल छथि॥
„ उपमा मुखक ने हमर संग अछि।
सखि हे लाजे भगैत बहुत अनंग अछि॥

सखि हे उर पर माल माणिक शोभै छनि।
„ ग्रीवा तिन दिशि काम छोभै छनि॥
„ बाँहि आजानु प्रलम्ब केहन छनि।
„ अरि के ने आगु आवए दैत छनि॥
„ बामा हाथ सोहै डालि छनि।
„ अखनेक तोड़ल भरल फुल छनि॥
„ सिंहक कटि सन कटि खीन छनि।
„ ताहिपर पीत सोहै पट छनि॥
„ दुनु सुन्दर शीलक घर छथि।
सखि हे "कनक"क इष्ट जीवन धन छथि॥

सीताक ध्यान भंग करबाक प्रयत्न

सखि हे देखु नयन खोलि दुहु सिय हे।
सन्मुख छथि ठाढ़ निहारि लिअ हे॥

जनिका देखक व्याकुल जिय छल।
ठाढ़े आगु जुड़ाउ निय हे॥

गौड़ी ध्यान करब खुब पाछाँ।
छवि लखि भरि लिअ' निज हिय हे॥

प्रथम सुअवसर हाथ आ'एल अछि।
आब बेहाथ ने जा'य दिअ हे॥

"कनक" लखू ई लालक शोभा।
बात हमर सत मानि लिअ॥

सीताक नकारात्मक उत्तर

सखि हे आँखि ने ता'कव ने जगाउ हमरा।
सखि हे थिकहुँ नुकौने चित चोर हियरा॥
छलहुँ कटै'त दुख कते'क दिबससँ. कहितहुँ ई गप कहु ककरा।
जै दिनसँ नारद कहि गेला. छलहुँ अवैत सत बुझि तकरा॥
पुजलहुँ शंकर गौड़ी कत्तेक. आशा आई पुरल हमरा।
श्री सुभगा के धन्य कहू सभ. जे लखाए जुड़ा'एल जियरा॥
आँखि खोलु हम सखी को'ना हे. निकसि जेता विच पल केवरा।
"कनक" अली जनु शोर करू अति. शोभा देखए दिअ एकरा॥

सखीक अनुमान

आब हम जानि गेलौं जानि गेलौं. तारि गेलौं ए'।
अहाँक हियराक बात सभ. हम तारि गेलौं ए'॥०॥
राम होथि वर सुघ'र. हिय हो'इछ तर-उप'र।
बँद आँखि ध्यान धारि गेलौं. धारि गेलौं ए'॥१॥
अछि हमरो इ विचार. भरि मिथिला बजार।
कहू हमरा साँच साँच. हम त तारि गेलौं ए'॥२॥
चलू गौरीक मन्दिर. अहाँ धरू चीत धीर।
दिअ, सरवश निछारि. हम सम्हारि गेलौं ए'॥३॥
जँ' ढरथि गौरी माई. तँ' ने रहए कठिनाई।
लीअौ "कनक" विचारि. हम विचारि लेलौं ए'॥४॥

Date 12·6·77
SIMLA

प्रस्थानक हेतु आग्रह

स्वामिनि ए' करू नहि देरी ॥
कालिह लाल पुनि अओता. अमीचखबौता।
फुल लोढ़ि लोढ़ि हिया जुड़ौता. निज गुरूसँ' माथ पुजौता ॥
मिलि देव तखन सभ बेरी ॥१॥
आएव पुनि कालिह पुजै लए. गौरि भुलवै लए।
वर माँगब अहीं के भल लए. तरि जाएव हुनक सुरति लए ॥
गीत गाएव मधुर मधु टेरी ॥२॥
वोहो "कनक" छथि भूलल. अहूँ छी रँगल।
हियरा मे पड़ै अछि नहि कल. पुनि डेगो करै अछि तलमल ॥
अवश वनब प्रभु चेरी ॥३॥

प्रार्थना

जय जय गिरवरराज किशोरी. शंकर प्राण अधारि।
षनमुख, गणपति जे सिरजैलनि. प्रियतम रुख अनुसारि ॥
जे गणपति के ध्यान धरै छथि. दै छथि हुनका तारि।
अपने तँ, खुद माथ हुनक छी. छी सभ पालन हारि ॥
अंग अंगसँ' दामिनि सदृश. हो'इछ ज्योति उजियारि।
पौलनि पारके अंत आदि विच. हम त' निछछ गमारि ॥
देवी मे अछि ठाम प्रथम अहँ. महिमा अगम अपारि।
शेष शारदा पार ने' पौलनि. हम तँ' अबुधि अनारि ॥
अहँक चरण पद सेवि भे'टै अछि. अनुपम फल वर चारि।
सुर, नर, मुनि, पद कमल पूजि कए. हो'इ छथि परम सुखारि ॥

हमहूँ अएलहुँ अछि जाँचै लए. आइ अहाँके द्वारि।
सकल जनकपुर नारि पुरुष जे. लेलनि हीय विचारि॥
"कनक" कहैते प्रेम विभोरैं. सुधि वुधि देल विसारि।
गौड़ी चरण कमल दुहु धैलनि. बहल नयन दुहु वारि॥

गौड़ीक हँसब

गौरी हँसली किअए।
स्वामिनि विनय पर हँसली किअए॥०॥
...त्रमसँ' लेली बनाय. सिया के रूप तजि वचन पिये।
...ालनि कष्ट कतेक. जग भरि जनैये सभके जिये॥
एहि वेरि शंका भेलनि हीय. स्वामिनि पुजै छथि चेरी तिये।
बुढ़ विगड़थि नहि कहुँ अहुवेरि. मुसकलि तेहिसँ' अप्पन हिये॥
"कनक" छली मरयादा रखैत. लीला करै छलि हम्मर सीये॥

गौड़ीक वरदान

सुनु सिय सत्य अशीष हमर हे।
जै लए ध्यान हमर अहाँ कएलहुँ. देलहुँ हम से वर हे।
श्याम सुन्दर लए मन जे उमड़ल. अओता अपने कर हे॥
नारद वचन असाँच न होएत. वारल छथि रघुवर हे।
करुणानिधि वो दयाशिरोमणि. रघुकुल के उजियर हे॥
प्रमुदित मन निज जाउ महल कैँ. राखु मूर्ति साँवर हे।
लिअ अनन्द तकि बाट मिलन कैँ. ताकथि नगर सगर हे॥
"कनक" पुरल जे भाव हृदय छल. हाथ सुना गिरिवर हे।
अंग अंग शुभ फरकि रहल अछि. सभ कए फए फर-फर हे॥

विश्वामित्र सँ श्रीराम

सुनु सुनु गुरूजी बाबा. कथा मजेदार औ।
बगिया मे देखलौं ह'म. शोभा मजेदार औ॥
सखी संग आएल छली. कुमरि उदार औ।
जनिक स्वयंवर देखए. अएलहुँ सरकार औ॥
रूप, गुण, शील, शोभा. आदिक अगार औ।
रतियो करोड़ो चाट्. भागथि वेज़ार औ॥
केनाक' बनौलनि विधि. शोभा सुख सार औ।
ए'ह्ी मे सभ अप्पन गुण के. देलनि क' बहार औ॥
"कनक" लजाकए मनमे. कहलन्हि ने' बिचार औ।
बुझलनि हिया के भाव. अपनहि सरकार औ॥

झाँकीक प्रभाव

झाँकी देखि रघुवीर. सुभगा बनली गम्भीर।
मन त मोहि लेल. मोहनी मुरतिया हे॥०॥
लालक औंठिया केश. छत्र नागक सुवेश।
डंक मारि देल. सखि के हियरिया हे॥१॥
चानन केशर वो' खौर. तै पर अलक झिकझोर।
माथ चम चम. किरीट मुकुटिया हे॥२॥
भौंह पातर सुकमान. तानि छोड़ल नैन वाण।
हिय थाम्हि सखि. बनली वेसुधिया हे॥३॥
कान कुंडलके चमक. चान सूर्य जेना झक।
"कनक" हँसि अखि [illegible]

Library IIAS, Shimla
H 811 Si 86 S
00031816